कौटिल्य (Kautilya)

(376 ई०पू० BCE - 283 ई०पू० BCE (Julian))

☆ कौटिल्य या चाणक्य या विष्णुगुप्त।

☆ चणक नामक व्यक्ति के पुत्र होने के कारण चाणक्य कहलाए।

☆ कूटनीति, अर्थनीति, राजनीति के महान विद्वान होने कारण और अपने महाज्ञान का कुटिल सदुपयोग, जनकल्याण तथा अखण्ड भारत के निर्माण जैसे सृजनात्मक कार्यों के करने के कारण वह कौटिल्य कहलाए।

☆ विष्णुगुप्त, उनके बचपन का नाम था, जिसे उनकी माता-पिता ने रखा था।

☆ चाणक्य के नाम पर एक धारावाहिक 8 सित० 1991 से 9 अगस्त 1992 तक 47 भागों में D.D. नेशनल (दूरदर्शन) पर प्रसारित किया गया था। ☆ डॉ० चन्द्र प्रकाश द्विवेदी द्वारा लिखित एवं निर्देशित।

कौटिल्य के जन्म स्थान के संबंध में अत्यधिक मतभेद रहने के कारण निश्चितरूप से यह कहना कि उनका जन्मस्थान कहाँ था, कठिन है परन्तु कई सन्दर्भों के आधार पर तक्षशीला को उनका जन्म स्थान मानना ठीक होगा।

कौटिल्य का प्रारंभिक जीवन और शिक्षा – कौटिल के पिता चणक एक गरीब द्रविड़ ब्राह्मण थे। उनका बचपन गरीबी और दिक्कतों में गुजरा। उनकी बुद्धि की प्रखरता और उनकी विद्वता उनके विचारों से परिलक्षित होती है। उनकी शिक्षा दीक्षा का कोई खास जिक्र नहीं मिलता है। वह कुरूप होते हुए भी शारीरिक रूप से बलिष्ठ थे।

उनका प्रसिद्ध ग्रन्थ अर्थशास्त्र है। इसके अवलोकन से उनकी प्रतिभा, बहुआयामी व्यक्तित्व और दूरदर्शिता का पूर्ण आभास होता है।

* कौटिल्य एक स्वाभिमानी एवं राष्ट्रप्रेमी व्यक्ति थे। उनके द्वारा व्यावहारिक राजनीति में प्रवेश का एक कारण इस घटनाक्रम को माना गया है, जब वे धनानन्द के दरबार धनानन्द से सीमान्त देशों के लिए सैनिक सहायता मांगते हैं के लिए की विनती करते हैं, जिससे की बाहरी आतातायी भारतीय जन का अशुभ न कर सकें। परन्तु मद में अंधे धनानन्द ने उन्हें अपमानित कर सभा से बलपूर्वक निकलवा दिया। इस बलप्रयोग में उनकी शिखा खुल गया। कौटिल्य ने कोप में आकर अपनी खुली हुई शिखा को तबतक नहीं बाँधने का प्रतिज्ञा किया, जब तक की धनानन्द वंश का नाश नहीं कर देंगे।

☆ कौटिल्य की सर्वोपरी इच्छा थी भारत को एक गौरवशाली और विशाल राज्य (अखण्ड भारत) के रूप में देखना। निश्चितरूप से चन्द्रगुप्त मौर्य उनकी इच्छा का केन्द्र बिन्दु था। आचार्य कौटिल्य को एक पारंगत और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ के रूप में मौर्य साम्राज्य का संस्थापक और संरक्षक माना जाता है तो दूसरा उन्हें संस्कृति साहित्य के इतिहास में अपनी अतुलनीय एवं अद्भुत कृति के कारण अपने विषय का एक मात्र विद्वान होने का गौरव प्राप्त है।

कौटिल्य की विद्वता, निपुणता और दूरदर्शिता का बखान भारत के शास्त्रों, काव्यों तथा अन्य ग्रन्थों में परिव्याप्त है। कौटिल्य द्वारा नन्दवंश का विनाश और मौर्य वंश की स्थापना से संबंधित कथा विष्णु पुराण में आती है।

✡ अति विद्वान और मौर्य साम्राज्य का महामंत्री होने के बावजूद कौटिल्य का जीवन सादगी और ऊँचे आदर्श भरा था। वह छोटे से मकान में रहते थे और कहा जाता है कि उनके मकानों की दीवारों पर गोबर के उपले थोपे रहते थे।

✡ उनकी मान्यता थी कि राजा या मंत्री अपने चरित्र और ऊँचे आदर्शों के द्वारा लोगों के सामने (आम जनता के सामने) एक प्रतिमान दे सकता है। उन्होंने आजीवन मर्यादाओं का पालन किया और कर्मठता की ज़िंदगी बितायी। वह 'सादा जीवन उच्च विचार' का सही प्रतीक थे। वस्तुतः उन्हें धन, यश और पद का कोई लोभ नहीं था।

✡ सारतत्व (सारांश) में कौटिल्य एक वितरागी तपस्वी, कर्मठ और मर्यादाओं का पालन करने वाले व्यक्ति थे। उनका जीवन आज भी अनुकरणीय है।

चाणक्य की विचार धारा →

✡ ऋण, शत्रु और रोग को शेष नहीं रखना चाहिए। (समाप्त कर देना चाहिए)

✡ वन की अग्नि चन्दन की लकड़ी को भी जला देती है अर्थात दुष्ट व्यक्ति किसी का भी अहित कर सकता है।

✡ शत्रु की दुर्बलता जानने तक उसे अपना मित्र बनाए रखें।

✡ सिंह भूखा होने पर भी तिनका नहीं खाता।

✡ एक ही देश के दो शत्रु परस्पर मित्र होते हैं।

✡ आपातकाल में स्नेह करनेवाला ही मित्र होता है।

✡ एक बिगड़ैल गाय सौ कुत्तों से ज्यादा श्रेष्ठ है। अर्थात एक विपरित स्वभाव का परमहितैशी व्यक्ति, उन सौ लोगों से श्रेष्ठ है जो आपकी चापलूसी करते हैं।

✡ आग सिर पर स्थापित करने पर भी जलाती है। अर्थात दुष्ट व्यक्ति का कितना भी सम्मान कर लें, वह सदा दुःख ही देता है।

✡ अपने स्थान पर बने रहने से ही मनुष्य पूजा जाता है।

✡ सभी प्रकार के भय से बदनामी का भय सबसे बड़ा होता है।

✡ सोने के साथ मिलकर चाँदी भी सोने जैसी दिखाई पड़ती है अर्थात सत्संग का प्रभाव मनुष्य पर अवश्य पड़ता है।

✡ ढेकुली नीचे सिर झुकाकर ही कुँए से जल निकालती है। अर्थात कपटी या पापी व्यक्ति सदैव मधुर वचन बोलकर अपना काम निकालते हैं।

✡ जो जिस कार्य में कुशल हो, उसे उसी कार्य में लगाना चाहिए।

✡ कठोर वाणी अग्निदाह से भी अधिक तीव्र दुःख पहुंचाती है।

✡ शक्तिशाली शत्रु को कमजोर समझकर ही उस पर आक्रमण करें।

✡ अग्नि, गुरु, ब्राह्मण, गौ, कुमारी कन्या, वृद्ध और बालक पर पैर न लगाए। इन्हे पैर से छूने पर आप पर बदकिस्मती का पहाड़ टूट सकता है।

के सुख

March 2023 — 15 WED — 12th Week • 074-291

☆ ऋण मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। यदि जीवन में खुशहाल रहना है, तो ऋण की एक फुटी कौड़ी भी पास नहीं रखनी चाहिए।

☆ मनुष्य सबसे दुखी भूतकाल और भविष्यतकाल की बातों को सोचकर होता है। केवल वर्तमान के विषय में सोचकर अपने जीवन को सफल बनाया जा सकता है।

☆ शिक्षा ही मनुष्य की सबसे अच्छी और सच्ची दोस्त होती है। क्योंकि एक दिन सुन्दरता और जवानी छोड़कर चली जाती है, परन्तु शिक्षा एक मात्र ऐसी धरोहर है जो हमेशा उसके साथ रहती है।

☆ व्यवसाय में लाभ से जुड़े अपने राज किसी भी व्यक्ति के साथ साझा करना आर्थिक दृष्टि से हानिकारक हो सकती है। अतः व्यवसाय के वास्तविक ज्ञान को अपने तक ही सीमित रखें तो उत्तम होगा।

☆ किसी भी कार्य को शुरू करने से पहले कुछ प्रश्न अपने आप से जरूर कर लें कि - क्या तुम सचमुच यह कार्य करना चाहते हो? आप यह कार्य क्यों करना चाहते हैं? यदि इन सब का जवाब सकारात्मक मिलता है तभी उस काम की शुरुआत करनी चाहिए।